

सूरह हुमज़ह^[1] - 104



सूरह हुमज़ह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 9 आयतें हैं।

- इस का नाम ((सूरह हुमज़ह)) है क्योंकि इस की प्रथम आयत में यह शब्द आया है जिस का अर्थ है: व्यंग करना, ताना मारना, गीबत करना आदि।^[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक में धन के पूजारियों के आचरण का चित्र दिखाया गया है और उन्हें सचेत किया गया है कि यह आचरण अवश्य विनाश का कारण है।
- आयत 4 से 9 तक में धन के पूजारियों का परलोक में दुष्परिणाम बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. विनाश हो उस व्यक्ति का जो
कचोके लगाता रहता है और चौटे
करता रहता है।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ۝

2. जिस ने धन एकत्र किया और उसे
गिन गिन कर रखा।

لِّلَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ۝

3. क्या वह समझता है कि उस का धन
उसे संसार में सदा रखेगा?^[2]

يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ۝

1 यह सूरह भी मक्की युग की आरंभिक सूरतों में से है। इस का विषय धन के पूजारियों को सावधान करना है कि जिन की यह दशा होगी वह अवश्य अपने कुकर्म का दण्ड पायेंगे।

2 (1-3) इन आयतों में धन के पूजारियों के अपने धन के घमंड में दूसरों का अपमान करने और उन की कृपणता (कंजूसी) का चित्रण किया गया है, उन्हें चेतावनी दी गई है कि: यह आचरण विनाशकारी है, धन किसी को संसार में सदा जीवित नहीं रखेगा, एक समय आयेगा कि उसे सब कुछ छोड़ कर खाली हाथ जाना पड़ेगा।

- | | |
|---|---|
| 4. कदापि ऐसा नहीं होगा। वह अवश्य ही "हुतमा" में फेंका जायेगा। | كَلَّا لَيُنْبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۝ |
| 5. और तुम क्या जानो कि "हुतमा" क्या है? | وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝ |
| 6. वह अल्लाह की भड़काई हुई अग्नि है। | نَارُ اللَّهِ الْمَوْقَدَةُ ۝ |
| 7. जो दिलों तक जा पहुँचेगी। | الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ ۝ |
| 8. वह उस में बन्द कर दिये जायेंगे। | إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّصَدَّدَةٌ ۝ |
| 9. लंबे लंबे स्तम्भों में ^[1] | فِي عَمَدٍ مُمَدَّدَةٍ ۝ |

1 (4-9) इन आयतों के अन्दर परलोक में धन के पुजारियों के दुष्परिणाम से अवगत कराया गया है कि उन को अपमान के साथ नरक में फेंक दिया जायेगा। जो उन्हें खण्ड कर देगी और दिलों तक जो कुबिचारों का केन्द्र है पहुँच जायेगी, और उस में इन अपराधियों को फेंक कर ऊपर से बन्द कर दिया जायेगा।